फर्स्ट कॉलम

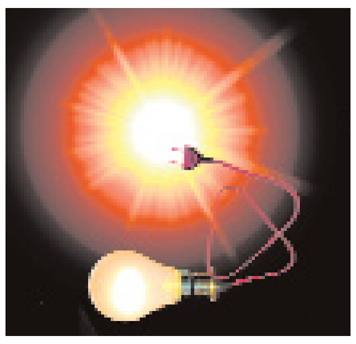

माय न्यू प्रोडक्ट

बिजली जाए तो जाए!

बिजली गुल होते ही अब आपको मोमबत्ती ढूंढने या इनवर्टर चालू करने की जरूरत नहीं रहेगी। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड की सौर ऊर्जा कंपनी रिलायंस सोलर ने ऐसे बल्ब व लालटेन बाजार में उतारे हैं जो सौर ऊर्जा से चलेंगे। आरुशि नामक लालटेन की कीमत 2,350 रुपए और आरलाइट नामक बल्ब (होम पावर लाइट) की कीमत 8,000 रुपए रखी गई है। कंपनी के दावानुसार एक बल्ब या लालटेन पूरे कमरे को उसी प्रकार प्रकाशित कर सकती है, जैसे एक सीएफएल बल्ब। इन उत्पादों को सूर्य की रोशनी में महज चार घंटे रखने पर ये तीन रातों तक लगातार रोशनी दे सकते हैं। कंपनी का दावा है कि ये उत्पाद कम से कम 25 साल तक सेवा देंगे। इन्हें दो माह में ग्राहको को उपलब्ध करवा दिया जाएगा।

माय इन्वेस्टमेंट

न्यू फंड ऑफर

- डीबीएस चोला एमएफ ने 13 महीने की अवधि का फिक्स्ड मैच्युरिटी प्लान सीरीज 11 पेश किया है। यह क्लोज एंडेड इनकम स्कीम है। इसमें न्यूनतम दस हजार रुपए का निवेश करना होगा। स्कीम में कोई एंट्री लोड नहीं है, लेकिन परिपक्वता अवधि से पहले इससे हटने पर 2 फीसदी एक्जिट लोड देना होगा। यह स्कीम 28 अगस्त तक निवेश के लिए खुली है।
- जेएम फाइनेंशियल एसेट मैनेजमेंट कंपनी ने 'जेएम मल्टी स्ट्रेटजी फंड' नाम से ओपन एंडेड इक्विटी फंड लांच किया है। इस फंड के तहत राशि इक्विटी और इक्विटी संबंधित स्कीमों में निवेश की जाएगी। इसके तहत 29 अगस्त तक यूनिट्स खरीदी जा सकती हैं। न्यूनतम निवेश राशि पांच हजार रुपए हैं। इसमें एंट्री लोड 2.25 फीसदी होगा।

माय मोबाइल

आईफोन से टक्कर!

आईफोन से मुकाबले के लिए देश की कई मोबाइल कंपनियां सक्रिय हो गई हैं। एलजी ने रिलायंस इंडिया मोबाइल के सहयोग से एलजी-10000 हैंडसेट बाजार में उतारा है। सीडीएमए सेगमेंट के इस टच स्क्रीन फोन में उपयोगिता व मनोरंजन दोनों दृष्टि से कई शानदार फीचर्स दिए गए हैं। इसमें जहां क्यूडब्ल्यूईआरटीवाई कीपेड, ड्यूल एप्लीकेशन, आफिस मेल, एचटीएमएल इनबिल्ड ब्राउजर और हाईस्पीड कनेक्टिविटी उपलब्ध करवाई गई है, तो वहीं वीडियो रिकार्डर के साथ 2 मेगापिक्सल कैमरा, एमपीईजी 4 वीडियो एवं ड्यूल स्टीरियो स्पीकर और एमपी 3 प्लेयर की भी सुविधा दी गई है। 2.8 इंच एलसीडी डिस्प्ले वाले फोन की मेमोरी को 8 जीबी तक बढ़ाया जा सकता है। बैटरी की टॉक टाइम क्षमता चार घंटे और स्टैंडबाय क्षमता 480 घंटे की है। इस मोबाइल फोन की कीमत 22 से 25 हजार रुपए के बीच रखी गई है।

माय बुक

तकनीकी पहलू भी जानें

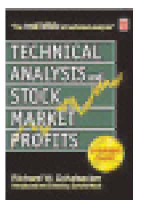

शेयर बाजार में सफलता के साथ ट्रेडिंग करने के लिए केवल बाजार की जानकारी होना ही पर्याप्त नहीं है। उसके तकनीकी पहलुओं के बारे में भी विस्तार से मालूम होना चाहिए। रिचर्ड डब्ल्यू शैचबैकर की किताब 'टेक्नीकल एनालिसिस एंड स्टाक मार्केट प्राफिट्स' बाजार से जुड़े तकनीकों मुद्दों पर विस्तार से प्रकाश डालती है। यह केवल एक किताब भर नहीं है, बल्कि इसके लेखक ने मार्केट के प्रत्येक पहलू की इतनी बारीकी से पड़ताल की है कि यह एक शोध-पत्र बन गई है। रिचर्ड पूरे अधिकार के साथ अपने निष्कर्षों को इस तरह से रखते हैं कि उन पर सहज ही विश्वास किया जा सकता है। इस किताब में वे यह भी बताते हैं कि किन कारणों से अच्छी तरह विश्लेषित भविष्यवाणियां भी गलत साबित हो जाती हैं। विशेषज्ञों ने इसे इस विषय पर अब तक का सर्वश्रेष्ठ कार्य करार दिया है। 452 पेज की पुस्तक की कीमत 592 रुपए है।

ब्याज दरों का गम? लागत करें कम

मकान के लिए होम लोन लेते समय ब्याज दरों की चिंता करने वाले लोग एक बेहद अहम पहलू की उपेक्षा कर देते हैं। यह पहलू मकान की लागत का है। आप थोड़ी-सी समझदारी दिखाएं तो दस लाख रुपए के मकान की लागत में आसानी से करीब पौने दो लाख रुपए तक की कमी की जा सकती है और इस तरह बढ़ी हुई ब्याज दरों की खानापूर्ति भी, वह भी गुणवत्ता के साथ समझौता किए बगैर।

एस.के. राजपूत

माय होम

होम लोन की ब्याज दरों में बढ़ोतरी से क्या मध्यम वर्ग के लिए खुद के मकान का सपना टूटता जा रहा है? इसमें कोई दो राय नहीं है कि अगर अभी आप मकान बनाने या खरीदने के लिए कर्ज उठाते हैं तो उस पर आने वाली मासिक किस्तें (ईएमआई) आपका बजट बिगाड़ सकती हैं। लेकिन इसका एक बेहद आसान रास्ता भी है। आप मकान की लागत में कमी कर लीजिए।

क्या ऐसा संभव है, वह भी गुणवत्ता व लुक के साथ समझौता किए बगैर? ऐसा बिल्कुल संभव है, बस जरूरत है तो थोड़ी जानकारी व थोड़ी समझदारी की। हम यहां 30 बाय 50 फीट भूखंड में 10 लाख रुपए की लागत से बनने वाले मकान का केस लेकर बताएंगे कि कैसे कदम-दर-कदम मकान निर्माण में बचत की जा सकती है।

साइट सिलेक्शन (नींव) – मकान सख्त जमीन (हार्ड स्ट्राटा) पर ही बनवाया जाना चाहिए। सख्त जमीन से कम से कम दो फीट तक नींव की खुदाई करना अनिवार्य होता है। यदि आप मकान का निर्माण करने जा रहे हैं तो शुरुआत भूखंड से ही करनी होगी। ऐसा भूखंड चुनें जिसमें सख्त जमीन बहुत नीचे नहीं हो। सख्त जमीन धरती के जितनी नीचे होगी, नींव का खर्च उतना अधिक होगा। अगर सख्त जमीन 10 फीट नीचे हो तो प्लिंथ तक कुल खर्च करीब डेढ़ लाख रुपए तक होगा। इसकी तुलना में अगर सख्त जमीन पांच फीट नीचे हो तो कांक्रीट, स्टील व मजदूरी में कम से कम 25 हजार रुपए तक की बचत की जा सकेगी।

फ्रेम स्ट्रक्चर – दो कॉलम के बीच की जगह ज्यादा बड़ी नहीं होनी चाहिए। यानी कॉलम मध्यम दूरी पर होने चाहिए। मकान को सुंदरता देने के लिए कम कॉलम लगाने के फेर में नहीं पड़ें। ऐसी स्थिति में मजबूती देने के लिए कॉलमों में भारी स्टील और हाईग्रेड कांक्रीट का इस्तेमाल करना होगा जिससे मकान की लागत में इजाफा होगा।

दीवारें – दीवारों के लिए ईंटें तो लगेंगी ही। ईंटें तीन प्रकार की होती हैं- सामान्य, चिमनी वाली और घोल वाली। 10 लाख रुपए के मकान में चिमनी वाली ईंटों पर खर्च करीब 52 हजार रुपए जबकि घोल वाली ईंटों पर खर्च 70 हजार रुपए होगा। एक नजर में घोल वाली ईंटों का इस्तेमाल महंगा सौदा दिख रहा है, लेकिन वास्तव में ऐसा है नहीं। सामान्य या चिमनी वाली ईंटों में 15 से 20 फीसदी ईंटें टूट जाती हैं, जबकि घोल वाली ईंटों में यह प्रतिशत महज एक से दो है। इस प्रकार ईंटों की लागत समान आ जाती है। इसका दूसरा फायदा यह है कि सामान्य या चिमनी वाली ईंटों से बनी दीवारों में दोहरा पलास्टर करना जरूरी है, जबकि घोल वाली ईंटों में एकल प्लास्टर से काम चल सकता है। इस प्लास्टर में 8 से 10 हजार रुपए तक की बचत आसानी से संभव है।

फर्श – फर्श का मामला व्यक्तिगत रुचि पर निर्भर करता है, लेकिन चाहे तो इसमें भी भारी बचत की जा सकती है। विट्रीफाइड टाइल्स लगवाने का मोह त्याग दें तो कम से कम 40 हजार रुपए तक की बचत की जा सकती है। दस लाख रुपए की लागत वाले मकान में सिरेमिक टाइल्स पर कुल मिलाकर 35 हजार रुपए का खर्च आता है, जबकि विट्रीफाइड टाइल्स पर यह खर्च 75 हजार रुपए तक हो सकता है। वैसे कोटा स्टोन भी लगवाया जा सकता है जो गुणवत्ता व दाम दोनों मामलों में सिरेमिक व विट्रीफाइड के बीच में पड़ेगा।

डिजायनिंग-एलिवेशन – मकान की लागत में इसकी अहम भूमिका है। डिजायनिंग का सबसे अच्छा फंडा यह है कि यह मकान की जरूरत के हिसाब से होनी चाहिए। इस मामले में आर्किटेक्ट से परामर्श लिया जाना बेहतर रहेगा। एक अच्छा आर्किटेक्ट जानता है कि मकान की प्लानिंग के अनुरूप कैसा एलिवेशन जरूरी है। अनावश्यक डिजायनिंग पर पैसा बर्बाद करने से सदैव बचना चाहिए क्योंकि इससे न तो मकान में मजबूती आती है और न ही सुंदरता बढ़ती है।

रैलिंग – कास्ट आयरन वाली रैलिंग के स्थान पर पाइप वाली रैलिंग का इस्तेमाल करें। 10 लाख रुपए की लागत वाले मकान में कास्ट आयरन निर्मित रैलिंग में 15 से 20 हजार रुपए का खर्च आएगा, जबकि पाइप वाली रैलिंग में खर्च केवल 5 से 6 हजार रुपए होगा। इस प्रकार 10 से 15 हजार रुपए की बचत रैलिंग की मद में की जा सकती है। रैलिंग में अनावश्यक कर्व या डिजाइनिंग से बचा जाए तो यह बचत और भी बढ़ सकती है।

दरवाजे-खिड़कियां – सागवान की लकड़ी का दरवाजा ज्यादा से ज्यादा मुख्य द्वार पर लगवाया जा सकता है। अन्य जगह फ्लश डोर (बोर्ड दरवाजों) का इस्तेमाल किया जाना बेहतर रहेगा। इसी प्रकार एक बड़ी बचत विंडो फ्रेम में की जा सकती है। पूरे मकान में लोहे से निर्मित पल्ले वाली चौखटों (देवास सेक्शन) के इस्तेमाल पर खर्च आएगा 35 हजार रुपए, जबकि सागवान निर्मित चौखटों व पल्लों पर 65 हजार रुपए से भी अधिक खर्च बैठेगा। इससे इस मद में भी 30 हजार रुपए तक की बचत की जा सकती है।

पेंटिंग – इस मद में 40 से 45 हजार रुपए तक की बचत की जा सकती है। आयल बाउंड डिस्टैम्पर (ओबीडी) का इस्तेमाल करने पर 40 से 45 हजार रुपए का खर्च आएगा, जबकि प्लास्टिक पेंट में यही खर्च बढ़कर 90 हजार रुपए तक हो जाएगा। मकान में बहुत ज्यादा रंगों के प्रयोग से बचें। जितने ज्यादा रंग होंगे, खर्च भी उतना ज्यादा होगा।

इलेक्ट्रिसिटी – स्वीच में बचत की जा सकती है। सेमी माड्यूलर स्वीचों पर करीब 8 हजार रुपए का खर्च आएगा, वहीं माड्यूलर स्वीचों पर खर्च होंगे 16 हजार रुपए।

(लेखक भोपाल में कार्यरत आर्किटेक्ट हैं।)

बनी रहेगी गुणवत्ता

घर निर्माण की लागत में कमी करने का मतलब यह नहीं है कि गुणवत्ता से कोई समझौता किया जा रहा है।

- घोल वाली ईंटों के इस्तेमाल से दीवारें अपेक्षाकृत मजबूत बनेंगी व सीपेज की दिक्कत नहीं आएंगी।
- सिरेमिक व विट्रीफाइड टाइल्स में केवल लुक का ही अंतर है। गुणवत्ता के मामले में कोई विशेष फर्क नहीं पड़ेगा।
- रैलिंग चाहे कास्ट आयरन वाली हो या पाइप की, इससे कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता है। पेंट होने के बाद दोनों एक जैसी दिखती है।
- लोहे से निर्मित पल्ले वाली चौखटें मजबूती व मैन्टेनेंस के मामले में सागवान की चौखटों से कहीं बेहतर होती हैं।
- प्लास्टिक पेंट कुछ ज्यादा समय तक चलता है, लेकिन ओबीडी पेंट भी खराब च्वाइस नहीं है।
- सेमी माड्यूलर स्वीच सेफ्टी के मामले में माड्यूलर स्वीच से कहीं भी उन्नीस नहीं हैं।

कहां कितनी बचत (रुपए में)

दरवाजे-विंडो फ्रेम	30,000
पेंटिंग	45,000
इलेक्ट्रिसिटी	8,000
प्लास्टर	10,000
नींव	25,000
फर्श	40,000
रैलिंग	15,000
कुल बचत	**1,73,000**

क्लेम करें लाभ उठाएं

सुभाष लखोटिया

माय एडवाइज

अन्य करदाताओं की तरह नौकरीपेशा व्यक्ति भी कर्ज लेकर मकान बनाता है या खरीदता है तो उसे चुकाए जाने वाले ब्याज पर सालाना अधिकतम डेढ़ लाख रुपए तक विशेष छूट का फायदा मिलता है। यहां एक सवाल यह उठता है कि किसी नौकरीपेशा व्यक्ति ने मकान बनाने या खरीदने के लिए कर्ज लिया है, तो उस कर्ज पर चुकाए जाने वाले ब्याज में कटौती का क्लेम क्या वह अपने नियोक्ता के पास ही कर सकता है या उसे इसके लिए आयकर विभाग के चक्कर काटने होंगे?

आयकर अधिनियम 1961 के प्रावधानों के मुताबिक नौकरीपेशा व्यक्ति कर्ज के ब्याज के रूप में जितनी राशि चुकाएगा, उतनी कटौती का लाभ खुद नियोक्ता भी दे सकता है। लेकिन इस लाभ को हासिल करने के लिए कर्मचारी पर कुछ जिम्मेदारियां भी बनती हैं। कर्मचारी को ही कर्ज व उस पर चुकाए जा रहे ब्याज से संबंधित जानकारी व दस्तावेज अपने नियोक्ता को पेश करने होंगे। कर्मचारी इन औपचारिकताओं का निर्वाह नहीं करता है तो इस स्थिति में कर्ज पर चुकाए जाने वाले ब्याज में कटौती लाभ नहीं दिए जाने पर नियोक्ता को जवाबदेह नहीं ठहराया जा सकेगा। ऐसी स्थिति में नियोक्ता को कर्मचारी को बगैर कोई छूट या राहत देते हुए उसकी सकल आय में से आयकर काटने का अधिकार होगा। तब कर्मचारी के पास आयकर रिटर्न फार्म के जरिये कटौती पर क्लैम करने के अलावा और कोई चारा नहीं रह जाएगा। हालांकि इसके जरिये भी वह होम लोन पर चुकाए जाने वाले ब्याज पर लाभ हासिल कर सकेगा, लेकिन निवेश की दृष्टि से यह अच्छा फैसला नहीं होगा। अगर कर्मचारी का टीडीएस नहीं कटता तो वह उसे कहीं निवेश कर सकता था।

ध्यान रखें

- आवास बनाने के लिए लोन किसी भी व्यक्ति या संस्थान से लिया जा सकता है, लेकिन उस राशि से वह मकान उस वित्तीय वर्ष की समाप्ति से तीन साल के भीतर पूरा हो जाना चाहिए जिस साल लोन लिया गया।
- जिस व्यक्ति या संस्थान से लोन लिया गया है, उससे संबंधित सर्टीफिकेट नियोक्ता को पेश करना होगा। इस सर्टीफिकेट में उस ब्याज राशि का जिक्र जरूर होना चाहिए, जो उठाए गए कर्ज पर दिया जा रहा है।
- उस व्यक्ति या संस्थान से ऐसा सर्टीफिकेट भी जरूर हासिल कर लें जिसमें यह दर्शाया गया हो कि चालू वित्त वर्ष में कर्ज पर कितना ब्याज बकाया है। यह सर्टीफिकेट भी अपने नियोक्ता को दे दें ताकि वह आपकी आय में कर (टीडीएस) नहीं काटते हुए उसका लाभ आपको दें।

(लेखक जाने-माने निवेश व कर विशेषज्ञ हैं)

छोटी-सी जुगत बड़ी-सी बचत

बचाना भी कमाई का ही एक जरिया माना जाता है। मौजूदा हालात में जब निवेश पर रिटर्न हासिल करना मुश्किल होता जा रहा है, छोटी-छोटी चीजों पर बचत भी राहत साबित होती है। इसलिए खर्च करने के साथ बचाना भी सीखें।

दीपक शर्मा

यह बहुत पुरानी कहावत है कि अगर आप एक टका कमा नहीं सकते, तो कम से कम उतना बचा तो लीजिए। बढ़ती मुद्रास्फीति के दौर में जब निवेश पर रिटर्न लगातार कम होता जा रहा है, इस कहावत को लागू करके इसकी खानापूर्ति की जा सकती है। कुछ टिप्स पर अमल करके आप अच्छा पैसा बचा सकते हैं। आखिर एक रुपया बचाने का मतलब एक रुपया कमाना ही तो होता है।

- हम अक्सर टीवी व कम्प्यूटर चालू कर उन्हें खुला छोड़ देते हैं। ट्यूबलाइट्स व पंखे घंटों यूं ही चलते रहते हैं। जरूरत होने पर ही इनका इस्तेमाल करें तो एक मध्यमवर्गीय परिवार इस मद में कम से कम 200 रुपए तक की बचत कर सकता है।
- मॉल्स में जब भी जाते हैं, तो एक न एक ऐसी चीज जरूर उठा लाते हैं जिसकी वास्तव में जरूरत नहीं होती है या जिनके बगैर भी आसानी से काम चल सकता है। मॉल्स विजिट का विश्लेषण करके पता लगाएं कि ऐसी कौन-सी चीजें हैं जो हम नहीं खरीदते तो भी फर्क नहीं पड़ता। इससे भविष्य में ऐसी खरीददारी से बचा जा सकता है।

बचत बनाए लखपति :

सर्टीफाइड फाइनेंशियल प्लानर सुरेश सदगोपन के आकलन के अनुसार छोटी-छोटी बचत करके महीने में कम से कम एक हजार रुपए बचाए जा सकते हैं। इस बचत को 8 फीसदी की दर से कहीं निवेश कर दिया जाए तो यही 30 साल में 15 लाख रुपए हो जाएगी। यानी हम छोटी-छोटी बचत करना सीख लें तो उसी से अच्छा रिटर्न हासिल कर सकते हैं। इन छोटी बचतों से हमारी लाइफ स्टाइल पर भी असर नहीं पड़ेगा।

न चेक न कैश ट्रेवल कार्ड से ऐश

आप विदेश यात्रा पर जा रहे हैं तो वहां खर्च होने वाला पैसा कैसे ले जाएंगे? इसके दो विकल्प बेहद प्रचलित रहे हैं- नकदी या ट्रेवलर्स चेक। लेकिन अब इसका एक तीसरा विकल्प भी उपलब्ध है- ट्रेवल कार्ड। यह अन्य दोनों विकल्पों से कहीं बेहतर है।

दीपक शर्मा

कार्ड का शुल्क : 110 से 150 रुपए।

रिलोडिंग शुल्क : 50 से 100 रुपए (शुरुआती लोडिंग निशुल्क)।

एटीएम से पैसे निकालना : प्रत्येक बार 1.50 से 2 डॉलर।

एटीएम बैलेंस पूछताछ : प्रत्येक बार 0.50 डॉलर।

राग वामदत्त

बढ़ती आमदनी और सस्ते एयर भाड़े की वजह से अब लोग विदेश यात्राओं पर पहले की तुलना में ज्यादा जाने लगे हैं। विदेश भ्रमण के समय सबसे बड़ी समस्या होती है कि खर्च करने के लिए पैसा कैसे ले जाएं, क्योंकि वहां लेन-देन रुपए में तो होगा नहीं।

हाल तक विदेश यात्रा के दौरान लोग नकदी या ट्रेवलर्स चेक ले जाते रहे हैं, लेकिन इन दोनों के साथ कई दिक्कतें भी जुड़ी रही हैं। नकदी ले जाने पर आपको विदेश में किसी अधिकृत डीलर या बैंक से संबंधित देश की मुद्रा खरीदनी होगी। हालांकि एक बार विदेशी मुद्रा ले लेने के बाद कोई कठिनाई नहीं होती, लेकिन उसकी सुरक्षा एक समस्या होती है। ट्रेवलर्स चेक अधिक सुरक्षित विकल्प हैं, लेकिन इन्हें भुनाते समय आपको कमीशन के रूप में जेब ढीली करनी पड़ेगी। ऐसे में इन दोनों से बेहतर विकल्प है ट्रेवल कार्ड। इसमें नकदी व ट्रेवलर्स चेक दोनों के फायदे शामिल हैं।

क्या है ट्रेवल कार्ड?

यह इलेक्ट्रानिक कार्ड होता है, बिल्कुल डेबिट कार्ड की तरह। यह प्री-पेड कार्ड होता है। आप जिस देश की यात्रा पर जा रहे हैं, उस देश की मुद्रा को उसमें भारत में ही लोड करवा सकते हैं। आप विदेश में उन सभी प्रतिष्ठानों में इसका इस्तेमाल डेबिट कार्ड की तरह कर सकते हैं जो वीजा कार्ड स्वीकार करते हैं। आप चाहें तो इससे वीजा एटीएम के जरिये नकदी भी निकाल सकते हैं।

ट्रेवल कार्ड के लाभ

सुविधाजनक : सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि इसे ले जाना और इस्तेमाल करना उतना ही सुविधाजनक है जितना अपने देश में डेबिट कार्ड का इस्तेमाल करना।

बीमा लाभ : इसके साथ बीमा भी जुड़ा होता है। हालांकि किस कार्ड में किस तरह की बीमा सुविधाएं मिलेंगी, यह अलग-अलग बैंकों पर निर्भर करेगा। आमतौर पर दुर्घटना होने, यात्रा दस्तावेज गुम हो जाने, कनेक्टिंग फ्लाइट छूट जाने, विमान अपहरण इत्यादि मामलों में बीमा का लाभ ट्रेवल कार्ड पर दिया जाता है। जैसे ही आप ट्रेवल कार्ड खरीदते हैं, बीमा लाभ शुरू हो जाते हैं और कार्ड के एक्टिव रहने तक जारी रहते हैं।

गुम जाए तो गम नहीं : अगर नकदी खो गई तो समझो आपके हाथ से सदा के लिए निकल गई, यदि ट्रेवलर्स चेक गुम गया तो आपको उसे जारी करने वाली एजेंसी के विदेश स्थित एजेंट से संपर्क करके नया चेक जारी करवाना होगा। ट्रेवल कार्ड में सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि संबंधित बैंक आपको एक साथ दो कार्ड देता है। इसमें एक वैकल्पिक कार्ड होता है। अगर आपका मूल कार्ड खो जाता है तो आपको केवल एक फोन करके उसे निरस्त भर करवाना होगा। इसके बाद आप अपने पास पहले से ही मौजूद वैकल्पिक कार्ड का इस्तेमाल कर सकते हैं।

ऑनलाइन पहुंच : कार्ड जारी करने वाले बैंक आपको कार्ड के जरिये किए गए लेन-देन के बारे में इंटरनेट के माध्यम से भी सूचनाएं देते हैं। इससे आप समय-समय पर बैलेंस भी पता कर सकते हैं।

कितनी राशि?

आरबीआई के दिशा-निर्देशों के अनुसार कोई भी भारतीय सामान्य विदेश यात्राओं के लिए एक साल के भीतर 10 हजार डॉलर (या समकक्ष अन्य देश की मुद्रा) से अधिक राशि का विनिमय नहीं कर सकता। यही नियम ट्रेवल कार्ड पर लागू होता है। यानी आप ट्रेवल कार्ड में 10 हजार डॉलर से अधिक राशि लोड नहीं करवा सकते।

जारी करने वाले बैंक

देश के कई प्रमुख बैंक ट्रेवल कार्ड जारी करते हैं। इनमें एसबीआई का 'विश्व यात्रा फॉरेन ट्रेवल कार्ड', एचडीएफसी का 'फारेक्स प्लस' और आईसीआईसीआई का 'आईसीआईसीआई बैंक ट्रेवल कार्ड' प्रमुख हैं।

जरूरी दस्तावेज

ट्रेवल कार्ड में विदेशी मुद्रा का विनिमय शामिल है, इसलिए कुछ औपचारिकताएं पूरी करना आवश्यक है। जरूरी दस्तावेजों में पासपोर्ट, कन्फर्म एयर टिकट व पैन कार्ड या फार्म 60 की फोटोकॉपी के साथ-साथ विदेश यात्रा का उद्देश्य (फार्म ए-2) बताना जरूरी होता है। साथ ही यह घोषणा-पत्र भी देना होता है कि आपने विदेशी मुद्रा विनिमय की अधिकतम सीमा सालाना 10 हजार डॉलर को पार नहीं किया है।

(लेखक न्यूयार्क में बिजनेस एनालिस्ट और वेबसाइट www.RaagVamdatt.com के सलाहकार हैं।)